दैनिक प्रार्थना

वैनिक प्रार्थना

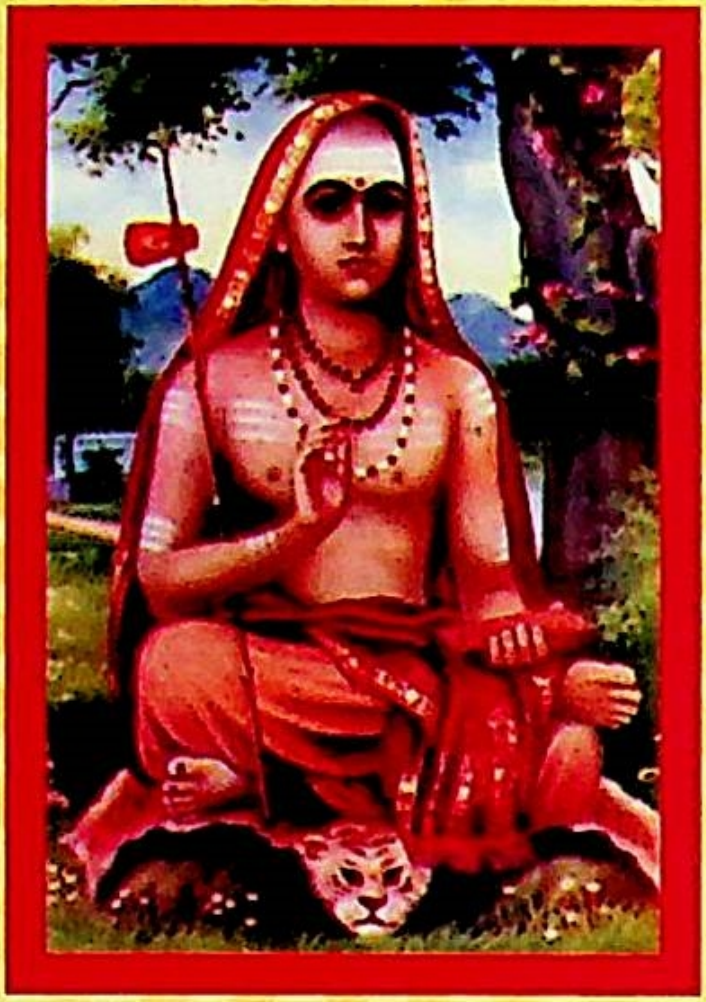

श्री आदि शंकराचार्य

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।।

श्री काँची कामकोटि पीठम

नं. 1, सालै स्ट्रीट, काँचीपुरम - 631 502 तमिल नाडु
Phone: (044) 2722 2115, E-mail: kanchimutt@gmail.com

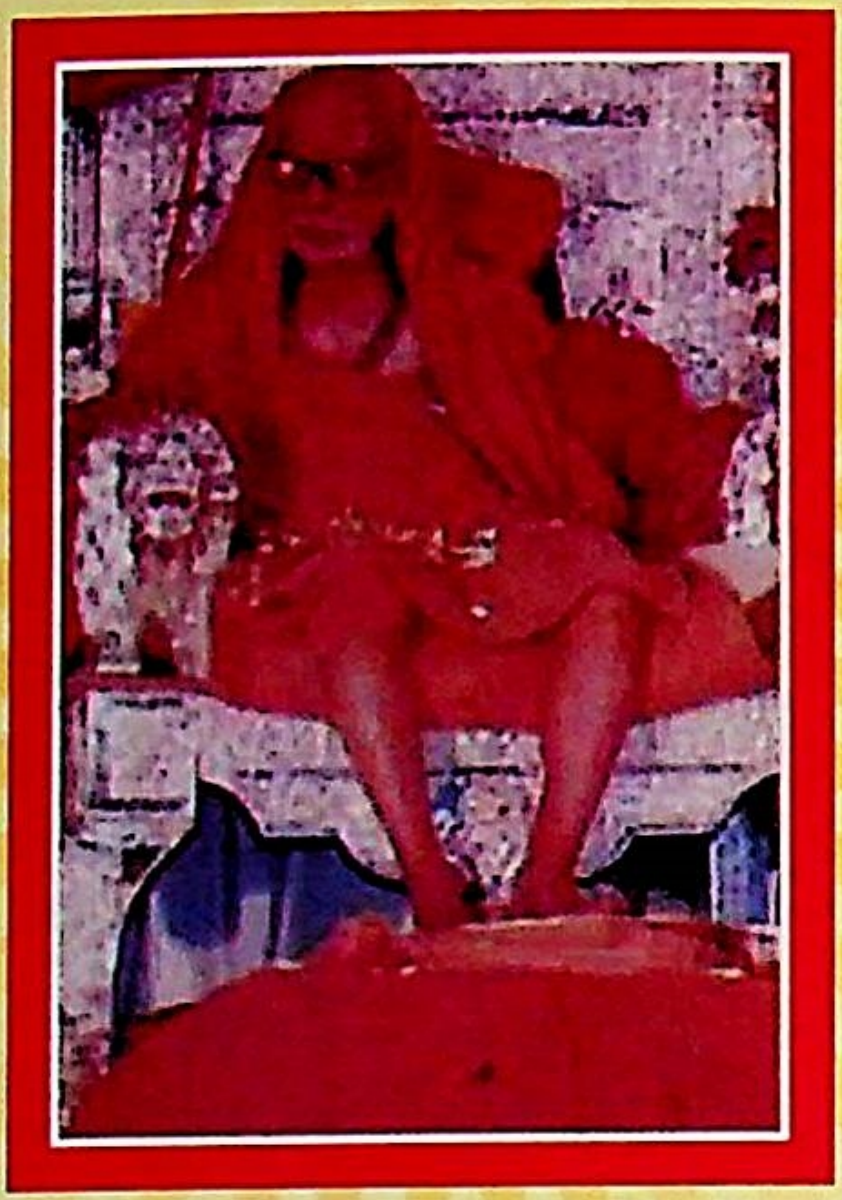

ब्रह्मलीन श्री चन्द्रशेखरेन्द्र जी महाराज

परमाचार्य

श्री काँची कामकोटि पीठ

काँचीपुरम्

देवताओं की स्तुति

श्री विनायक -

श्रीकान्तो मातुलो यस्य जननी सर्वमङ्गला ।
जनकश्शंकरो देवः तं वन्दे कुञ्जजराननम् ॥

श्री राम -

रामाय राम भद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

श्री कृष्ण -

वसुदेव सुतं देवं कंस चाणूर मर्दनम् ।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

श्री वेंकटेश -

श्रियः कान्ताय कल्याण निधये निधयेर्थिनाम् ।
श्री वेंकट निवासाय श्रीनिवासाय मंगलम् ॥

श्री अन्नपूर्णा -

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राण वल्लभे ।
ज्ञानवैराग्य सिध्दयर्थ भिक्षां देहि च पार्वति ॥

श्री देवी -

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गैरी नारायणि नमोस्तुते ॥

श्री शिव -

ब्रह्मगुरारि सुरार्चित लिंगम्
निर्मल भ्रासित शोभित लिंगम् ।
जन्मज दुःख विनाशक लिंगम्
तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥

अश्वत्थवृक्ष -

मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे ।
अग्रताश्शिवरूपाय वृक्षराजाय ते नमः ॥

॥ 1 ॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्,
द्वन्द्वतीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षि भूतम्,
भावातीतं त्रिगुण रहितं सद्गुरूं तं नमामि।।

॥ 2 ॥

गजाननं भूत गणादि सेवितं,
कपित्थ जम्बूफल सार भक्षितम्।
उमा सुतं शोक विनाश कारणं,
नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्।।

॥ 3 ॥

कर्पूर गौरं करूणावतारं,
संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे,
भवं भवानी सहितं नमामि।।

॥ 4 ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

॥ 5॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगम्,
सीता समारोपितवामभागम्।
पाणौमहासायक चारूचापं,
नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।

॥ 6 ॥

रामाय रामभद्राय
रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय
सीतायाः पतये नमः।।

॥ 7 ॥

लोकोभिरामं रणरंगधीरम्
राजीव नेत्रम् रघुवंश नाथम्।
कारूण्यरूपं करूणाकरं तं,
श्री रामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये।

॥ 8 ॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकोभिरामं श्री रामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।

॥ 9 ॥

श्री राम राम रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्त्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने।।

॥ 10 ॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभम् सुरेशम्,
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिहृद्धयानगम्यं,
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम्।।

॥ 11 ॥

करार विन्देन पदारविन्दम्,
मुखारविन्दे विनिवेशयंतम्।
वटस्य पन्नस्य पुटे शयानम्,
वालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।

॥ 12 ॥

वसुदेव सुतं देवं कंस चाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरूम्।।

॥ 13 ॥

मूकं करोति वाचालं,
पंगुं लंघयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे,
कृष्णं वन्दे जगद्गुरूं । ।

॥ 14 ॥

अतुलितबल धामं हेम शैलाभदेहं,
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं,
रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि । ।

॥ 15 ॥

मनोजवं मारूततुल्यवेगं,
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथ मुख्यं,
श्री रामदूतं शरणं प्रपद्ये । ।

॥ 16 ॥

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम् ।
नमामि भगवत्पाद शङ्करं लोकशङ्करम् । ।

॥ 17 ॥

या कुन्देन्द् तुषार हार
धवला या शुभ्र वस्त्रावृता,
या वीणा वर दण्डमण्डित
करा या श्वेत पद्मासना ।
या ब्रह्माच्युत शंकर
प्रभृतिभिः देवैः सदा वन्दिता,
सां मां पातु सरस्वती
भगवती निःशेष जाड्यापहा । ।

॥ 18 ॥

सर्वमंगल मांगल्ये
शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्रयम्बके गौरी
नारायणी नमोस्तुते।।

॥ 19 ॥

विष्णुपत्नीं प्रसन्नाक्षीं
नारायणसमाश्रिताम्।
दारिद्रय ध्वंसिनी देवीं
सर्वोपद्रव वारिणीम्।।

तू दयालु दीन हौ, तू दानि हौ भिखारी ।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप पुंज हारी ।।

नाथ तू अनाथ को अनाथ कौन मोसो ।
मो समान आरति नहिं, आरति हर तोसों ।।

ब्रह्म तू हौं जीव, तू ठाकुर हौं चेरो ।
तात मात गुरू सखा, तू सब बिधि हितु मेरो ।।

तोहि मोहि नाते अनेक, मानिये जो भावे ।
ज्यों त्यों `तुलसी' कृपालु चरण शरण पावे ।।

हे दयामय! आपही संसार के आधार हो ।
आपही करतार हो हम सब के पालनहार हो ।।

आपके उपकार का हम ऋण चुका सकते नहीं ।
बिनु कृपा के शांति सुख का सार पा सकते नहीं ।।

दीजिये वह मति बनें हम सद्गुणी संसार में।
मन हो 'मंजुल' धर्म मय और तन लगे उपकार में।।

****

मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुबीर।
अस विचारि रघुवंशमणि, हरहु विषम भव पीर।।

बार - बार बर मांगहुं, हरषि देहु श्री रंग।
पद सरोज अनपायनी, भक्ति सदा सत्संग।।

अर्थ न धर्म न काम रूचि गति न चहौं निर्वान।
जन्म जन्म रति राम पद, यह वरदान न आन।।

स्वामी मोहि न बिसारियो, लाख लोग मिलि जाहिं।
हमसे तुमको बहुत हैं, तुमसे हमको नाहिं।।

नहिं विद्या नहिं बाहुबल नहिं खर्चन को दाम।
मोसे पतित अपंग की, तुम पति राखहु राम।।

श्रवण सुयस सुनि आयहूँ, प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि त्राहि आरति हरन, शरण सुखद रघुबीर।।

कामिहिनारिपियारिजिमि, लोभिहिंप्रियजिमिदाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहुँ मोहिं राम।।

****

सियावर राम चन्द्र की जै,
पवन सुत हनुमान की जै,
शंकर हरि ओम जय जय सिया राम।

श्री हनुमते नमः

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरु चरन सरोज रज,
निज मनु मुकुरू सुधारि।
बरनऊँ रघुबर बिमल जसु,
जो दायकु फल चारि।।
बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौ पवन - कुमार।
बल बुधि विद्या देहु मोहिं,
हरहु कलेस बिकार।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि - पुत्र पवनसुत नामा।
महाबीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुंडल कुंचित केसा।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै।।
संकर सुवन केसरीनंदन।
तेज प्रताप महा जग बंदन।

विद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लषन सीता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियाहिं दिखावा।
बिकट रूप धरि लंक जरावा।
भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचंद्र के काज सँवारे।
लाय सजीवन लखन जियाये।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।
सहस बदन तुम्हारो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा।।
यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कबि कोबिंद कहि सके कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा।।
तुम्हारो मंत्र विभीषन माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँधि गये अचरज नाहीं।।
दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रच्छक काहू को डर ना।।
आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक तें काँपै।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै।
नासै रोग हरे सब पीरा।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा।
संकट ते हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा।।

और मनोरथ जो कोई लावै।
सोई अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा।
साधु संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम - जनम के दुख बिसरावै।।
अंत काल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई।।

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेई सर्ब सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जय जय जय हनुमान गोसाई।
कृपा करहु गुरू देव की नाई।।
जो सत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय मँह डेरा।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

श्रीराम स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु
मन हरण भवभय दारूणं।
नवकंज - लोचन, कंज - मुख,
कर - कंज, पद कंजारूणं।।
कंदर्प अगणित अमित छबि,
नवनील - नीरद सुन्दरं।
पट पीत मानहु तड़ित रूचि
शुचि नौमि जनक सुतावरं।।
भजु दीनबंधु दिनेश
दानव - दैत्यवंश निकंदनं।
रघुनंद आनंदकंद
कोशलचंद दशरथ - नंदनं।।

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारू
उदारू अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर-चाप-धर,
संग्राम - जित - खरदूषणं।।

इति वदति तुलसीदास
शंकर शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास कुरू,
कामादि खलदल - गंजनं।।

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि
सो बरू सहज सुंदर साँवरो।
करुणा निधान सुजान सीलु
सनेहु जानत रावरो।।

एहि भाँति गौरि असीस सुनि
सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि
पुनि मुदित मन मंदिर चली।।

सोरठा -

जानि गौरि अनुकूल
सिय हिय हरषु न जाई कहि।
मंजुल मंगल मूल
बाम अंग फरकन लगे।।

।। सियावर रामचन्द्र की जय ।।

नवग्रहस्तोत्रम्

- सूर्यः

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

- चन्द्रः

दधिशङ्ख तुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मकुटभूषणम् ॥

- अङ्गारकः

धरणीगर्भ सम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥

- बुधः

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥

- गुरुः

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसंनिभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥

- शुक्रः

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥

- शनैश्चरः

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥

- राहुः

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥

- केतुः

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥

आदित्याय च सोमाय मङ्गलाय बुधाय च ।
गुरुशुक्रशनिभ्यश्च राहवे केतवे नमः ॥

प्रातः स्मरणीय श्लोक

॥ 1 ॥

कराग्रे वसते लक्ष्मी,
कर मध्ये सरस्वती।
कर मूले तु गौरी स्यात्
प्रभाते कर दर्शनम्।।

॥ 2 ॥

समुद्रवसने देवि
पर्वतस्तनमण्डिते।
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं
पादस्पर्शं क्षमस्व में।।

॥ 3 ॥

अहल्या द्रौपदी सीता
तारा मण्डोदरी तथा।
पँच कन्याः स्मरेन्नित्यं
महापातकनाशकम्।।

स्नानारम्भ के समय पठनीय श्लोक

॥ 4 ॥

गंङ्गे च यमुने चैव
गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिंधु कावेरी
जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरू।।

भोजन के समय पठनीय श्लोक

॥ 5 ॥

अन्नपूर्णे सदापूर्णे
शंकर प्राणवल्लभे।
ज्ञान वैराग्य सिद्धयर्थं
भिक्षां देहि च पार्वति।।

घर के बाहर चलते समय स्मरणीय श्लोक

॥ 6 ॥

बनमाली गदी शाङ्गी
शंङ्खी चक्री च नन्दकी।
श्रीमान् नारायणो
विष्णुर्वासुदेवोऽभिरक्षतु।।

शयन के पूर्व स्मरणीय श्लोक

॥ 7 ॥

अच्युतं केशवं विष्णुं हरिं
सोमं जनार्दनम्।
हंसं नारायणं कृष्णं
जपेत दुःस्वप्नशान्तये।।

पूजा के बाद क्षमा प्रार्थना

॥ 8 ॥

आवाहनं न जानामि
न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि
क्षमस्व परमेश्वर । ।

॥ 9 ॥

मंत्रहीनं क्रियाहीनं
भक्ति हीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मयादेव
परिपूर्णं तदस्तु ते । ।

॥ 10 ॥

अपराध सहस्राणि
क्रियन्ते ऽहर्निशं मया ।
दासोऽयं इति मां मत्वा
क्षमस्व पुरूषोत्तम । ।

नवग्रह स्तुति

आदित्याय च सौमाय मंगलाय बुधाय च ।
गुरुशुक्र शनिभ्यश्च राहवे केतवे नमः ॥

श्री सूर्य नारायण द्वादश नामावलिः

मित्राय नमः

रवये नमः

सूर्याय नमः

भानवे नमः

खगाय नमः

पूष्णे नमः

हिरण्यगर्भाय नमः

मरीचये नमः

आदित्याय नमः

सवित्रे नमः

अर्काय नमः

भास्कराय नमः

श्री सूर्यनारायण स्वामिने नमः

श्री द्वादशज्योतिर्लिङ्गानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालं ओंकारममलेश्वरम् ॥
परल्यां बैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंङ्करम् ।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे ।
हिमालयेतु केदारं घुश्मेशं च शिवालये ॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायंप्रातः पठेन्नरः ।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥

शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय विलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥ 1 ॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथ महेश्वराय ।
मन्दारमुख्यबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै मकारमहिताय नमः शिवाय ॥ 2 ॥

शिवाय गौरीवदनाब्जबृन्द
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥ 3 ॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥ 4 ॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै यकाराय नमः शिवाय ॥ 5 ॥

॥ शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् संपूर्णम् ॥

आरती श्री गंगा जी की

ओ३म् जय गंगे माता, मैय्या जय गंगे माता ।
जो नर तुमको ध्याता, मन वांछित फल पाता ॥
॥ ओ३म् ॥

चन्द्र सी जोत तुम्हारी, जल निर्मल आता ।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता ॥
॥ ओ३म् ॥

पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता ।
कृपा दृष्टि तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता ॥
॥ ओ३म् ॥

एक ही बार जो तेरी, शरणागति आता ।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता ॥
॥ ओ३म् ॥

आरती माता तुम्हारी, जो नर नित गाता ।
अर्जुन वही सहज में, मुक्ति को पाता ॥
॥ ओ३म् ॥

श्री काँची कामकोटि पीठाधिपति जगद्गुरू शंकराचार्य

श्री जयेन्द्र सरस्वती एवं जगद्गुरू शंकराचार्य

श्री शंकर विजयेन्द्र सरस्वती

स्वामिभ्यः समर्पितम्

शंकराचार्य

श्री जयेन्द्र सरस्वती स्वामीजी

शंकराचार्य

श्री शंकर विजयेन्द्र सरस्वती स्वामीजी

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

Mata Kheer Bhawani

"Printed on the auspicious occasion of
Jyestha Ashtami celebrations of
Mata Kheer Bhawani,
29th May 2012
Srinagar, Jammu & Kashmir"